बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-102 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | मई 2022 | मूल्य - 5 रूपए

प्रचंड गर्मी में सड़कों पर गुजर बसर करने वाले बच्चों का जीवन हुआ दूभर

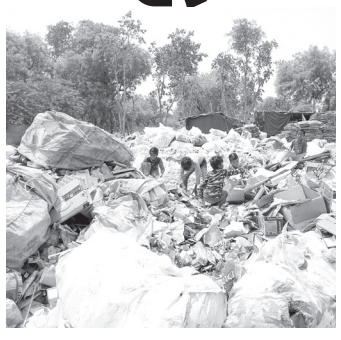

ब्यूरो रिपोर्ट

दिन प्रतिदिन बढ़ते तापमान से गर्मी अपने चरम पर है। बढ़ती गर्मी के चलते सड़कों पर गुजर बसर करने वाले बच्चों का जीवन दूभर हो रहा है। इन समस्याओं के बारे में हमारे पत्रकारों ने पश्चिम दिल्ली, साउथ दिल्ली और नोएडा के अनेक स्थानों पर रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बात की और उनकी परेशानियों को विस्तार से जाना।

10 वर्षीय अरुण (परिवर्तित नाम) ने बताया, "भैया मैं कबाड़ा बीनने का काम करता हूं। मैं सुबह 8 बजे कबाड़ा बीनने के लिए निकल जाता हूं और शाम को 5 बजे घर वापस आता हूं। सडकों पर

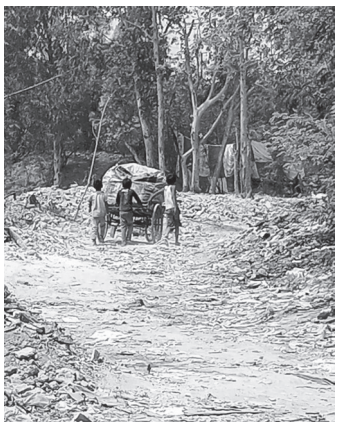

जब हम कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं तो बहुत तेज धूप होती है और गर्मी के कारण पसीना भी बार-बार निकलता रहता है। पसीना आने से पूरे शरीर में खुजली होने लगती है और उसे दूर करने के लिए जब हम खुजला देते हैं तब सारा शरीर लाल हो हो जाता है। बाद काफी जलन सी भी मचती है और जिसके कारण फोड़े फुंसी भी निकल आते हैं।"

13 वर्षीय अंजलि (परिवर्तित नाम) ने बताया कि " हम झुग्गी बस्ती में रहते हैं और यहाँ पर लगभग 140 से लेकर 150 झुग्गियां हैं। बहुत सारे बच्चे इन झुग्गी बस्तियों में रहते हैं। इस स्थान पर रात के समय ही लाइट आती है और पूरे दिन लाइट नहीं रहती। काफी तेज धूप के कारण झुग्गी में बैठने का मन तक नहीं करता है और जिन लोगों के पास सूर्य प्लेट है उनके घर में लाइट पंखा की सुविधा है। परंतु हमारे यहां पर ऐसी सुविधा तो है नहीं इसलिए बिना लाइट के ही दिन काटना पड़ता है। हमारे पास सूर्य लाइट खरीदने के पैसे नहीं और वह काफी महंगी भी आती है तो हम लोग गर्मी से बचने के लिए आसपास के पेड़ पौधों के पास जाकर बैठ जाते हैं।"

11 वर्षीय विशाल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, "भैया मैं और मेरे भाई-बहन मार्केट में गुब्बारे और खिलौने बेचने का काम करते हैं। जिस मार्केट में हम जाते हैं वहां छाय जैसी कोई सुविधा ही नहीं है। हमें पूपूरे दिन तपती हुए धूप में काम करना पड़ता है। हम जब घर से अपने काम के लिए निकलते हैं, तो हम अपने साथ पानी और खाना भी साथ लेकर जाते हैं, जिससे कि हम भूख लगने पर खाना खा सकें और पानी पी सकें। परंतु इतनी गर्मी होने के कारण पानी गर्म हो जाता है और खाना खराब हो जाता है और मजबूरन वह खाना हमें फेकना पड़ता है। तेज धूप होने के कारण हम पानी के पाउच भी नहीं ले सकते क्योंकि वह काफी ठंडे होते हैं और धूप में काम करने के बाद यदि हम ठंडा पानी पी लेते हैं तो खांसी जुकाम हो जाता है। इससे भी बड़ी समस्या इस बात की है कि आने वाले दिनों में गर्मी और बढ़ेगी और उस समय हमारा क्या होगा। हम कैसे इससे खुद को बचाएंगे चिंता तो इस बात की है।"

तपती धूप में काम करते सड़क एवं कामकाजी बच्चे

डिहाईड्रेट रखने के लिए न हैं नींबू पानी ओर ग्लूकोन डी के पैसे

ब्यूरो रिपोर्ट

जैसे जैसे दिन गुजरता है वैसे वैसे गर्मी अपने चरम पर होती है। धुल भरी गरम हवाएं तो ऐसी चलती हैं कि किसी भी अच्छे खासे इंसान को चक्कर दिला दे। अभी तो सिर्फ अप्रैल का महीना ही गुजरा है। तब गर्मी का यह रौद्र रूप देखने को मिल रहा है तो सोचिए मई और जून में क्या हाल होगा। बारहाल इतनी गर्मी में जो लोग धूप और सड़कों पर काम करने जाते हैं उनको बहुत सी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। गर्मी से बचने के लिए वो समय-समय पर कभी ग्लूकोज, तो कभी नींबू पानी या अन्य एनर्जेटिक ड्रिंक्स का सेवन करके अपने आपको डिहाईड्रेट रखने की कोशिश करते हैं। वहीं दूसरी ओर सड़क एवं कामकाजी बच्चे बिना किसी नींबू पानी या अन्य किसी एनर्जेटिक

शेष पृष्ठ 2 पर

पत्रकारों ने किया बच्चों की समस्या का समाधान

आधार केंद्र जाकर बिना किसी अनैतिक भुगतान के बनवाएं अपना आधार कार्ड

ब्यूरो रिपोर्ट

बालकनामा पत्रकारों ने नोएडा दिल्ली के स्थानों पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की। इस मीटिंग का उद्देश्य आधार कार्ड क्यों जरुरी है, कैसे बनवाएं, पर चर्चा करना और बच्चों को सही जानकारी देना था। बातचीत के दौरान पत्रकारों ने यह जानने की कोशिश की कि कितने बच्चों के पास आधार कार्ड है और ऐसे कितने बच्चे हैं जिनके पास आधार कार्ड नहीं है। कुछ बच्चों ने बताया, "भैया हमारे पास आधार कार्ड नहीं हैं और कुछ के पास आधार कार्ड थे तो परंतु वह खो गए हैं। बच्चों ने बताया कि हमने काफी ढूंढने की कोशिश भी की परंतु वह नहीं मिले और ना ही हमारे पास कोई ऐसी पर्ची या फोटो कॉपी है, जिससे हम दोबारा आधार कार्ड निकलवा सकें।" हमारे पत्रकारों ने बच्चों से सवाल किया कि जन्मपत्री से भी आधार कार्ड बन सकता है परंतु आप क्यों नहीं बनवा रहे हो? तो बच्चों ने बताया भैया हमारे पास जन्मपत्री तो थी पर जब उसे

निकलकर देखा तो जन्मपत्री को चूहों ने कुतर दिया था। 4 वर्ष बालक ने बताया, "भैया मेरे पास जन्मपत्री तो है लेकिन जब हम अपने पास के आधार कार्ड केंद्र पर आधार कार्ड बनवाने के लिए जाते हैं तो वह लोग 4000 से 5000 रुपए मांगते हैं और हमारे पास इतने पैसे नहीं होते कि हम उन्हें दे सकें। हमें इस बात का डर है कि जब कोई चेकिंग करने वाला आ जाता है तो हमें भारत का ना कहकर पाकिस्तान का निवासी कहने लगता है। हमारे पत्रकारों ने बच्चों की इस समस्या का समाधान करते हुए उनको उस आधार केंद्र की जानकारी दी, जहां पर बिना किसी एक्स्ट्रा पैसों के आधार कार्ड बन जाते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

स्कूलों में बढ़ती धांधली बिना पढ़ाएं ही बच्चों से ली जा रही हैं स्कूल फीस

ब्यूरो रिपोर्ट

स्कूल खुलने से सभी बच्चे बहुत खुश हैं। बड़े अरसे के बाद अब उन्हें स्कूल जाने का मौका मिला हैं। लेकिन ऐसे बहुत से बच्चे हैं जो स्कूलवालों के अनैतिक व्यवहार से बहुत दुखी हैं। स्कूल के प्रिंसिपल बच्चों से मनमानी फीस मांग रहे हैं। ऐसे ही कुछ बच्चों ने अपनी यह समस्या बालकनामा के पत्रकारों को बताई। 11 वर्षीय साहिल (परिवर्तित नाम) ने बताया, "भैया कोरोना के आने के बाद लॉकडाउन लग गया और जिसके कारण हमारी पढ़ाई भी छूट गई। लॉकडाउन के दौरान सारे स्कूलों में ऑनलाइन क्लास चल रही थी, लेकिन कुछ स्कूल ऐसे भी थे जिसमें ऑनलाइन क्लास नहीं चल रही थी। हमारे स्कूल में भी ऑनलाइन क्लास नहीं चल रही थी और पूरा साल बिना पढ़े ही बीत गया। जब स्कूल खुले और हम सभी स्कूल गए तो स्कूल के प्रिंसिपल ने हमसे पिछले साल की फीस मांगी। इस स्कूल में मैं और मेरा भाई पढ़ते हैं तो प्रिंसिपल ने बोला कि पहले तुम दोनों भाई पिछले साल के 70000 रूपए फीस दो, फिर पढ़ने के लिए स्कूल आओ। जब बच्चों ने प्रिंसिपल से बोला कि स्कूल ने हमें पढ़ाया ही नहीं तो हम किस बात की फीस भरें। हम तो जिस कक्षा में पढ़ रहे थे उससे अगली कक्षा में गए या या नहीं इसका तो रिपोर्ट कार्ड भी हमें नहीं मिला हैं। इसके बाद हमने जब प्रिंसिपल से टीसी मांगी तो उन्होंने टीसी देने से मना कर दिया। जिस गांव में वह स्कूल है वहां के माता पिता ने प्रिंसिपल सर से बात की तो उन्होंने उनके बच्चों का नाम भी लिख लिया और टीसी भी दे दी और प्रिंसिपल सर उस गांव में रहने वाले लोगों से पैसे भी नहीं लेते। समस्या इस बात की है कि हमारे पास न तो फीस के पैसे हैं और न ही प्रिंसिपल सर हमें टीसी दे रहे हैं। हम चाहते हैं कि कोई बड़े भैया दीदी स्कूल के प्रिंसिपल से बात करें और इसका समाधान निकालें, ताकि हम स्कूल जा सकें।

पढ़ना तो चाहता हूं, लेकिन काम करना है मजबूरी

बातूनी रिपोर्टर शालू व रिपोर्टर संगीता, लखनऊ

सड़क एवं कामकाजी बच्चों में से ऐसे बहुत ही कम ऐसे बच्चे किस्मतवाले होते हैं जो स्कूल जा पाते हैं। नहीं तो इन बच्चों की किस्मत में सिर्फ काम करना ही लिखा है। पत्रकार ने लखनऊ के श्रम विहार की बस्ती के बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की और बच्चों की समस्याएं जानने की कोशिश की।

उसमें से एक बच्चे ने अपनी समस्या रखते हुए बताया की दीदी हम स्कूल नहीं जा पाते हैं क्योंकि हम मोटर मैकेनिक का काम सीखने के लिए जाते हैं। इस काम से हमें जो थोड़ा बहुत पैसा मिल जाता है उसे हम अपने घर पर लाकर देते हैं। जब हमने उस बच्चे की समस्या को और विस्तार से जानने की कोशिश की तो उसने हमें बताया कि दीदी हमारे घर में सिर्फ हमारी मम्मी मजदूरी का काम करती हैं। उनकी मदद करने के लिए हम भी इतनी चिलचिलाती धूप में मोटर मैकेनिक का काम करने के लिए जाते हैं और पूरा दिन धूप में काम करते रहते हैं। जिसके कारण कभी-कभी ऐसा होता है कि हमारे सिर में दर्द होने लगता है और हमें चक्कर सा महसूस होने लगता है। पत्रकार ने उस बच्चे से पूछा कि अगर आपका स्कूल में दाखिला कराया जाए तो क्या आप स्कूल जा पाओगे तो बच्चे ने बताया कि जी दीदी हम स्कूल जा पाएंगे पर उसके साथ साथ हमें काम करना भी जरूरी है क्योंकि मम्मी हमारी बोलती हैं कि मैकेनिक का काम सीख लो। यह काम सीखने से आगे चलकर काम आएगा, जिसके कारण हमें मैकेनिक का काम सीखना पड़ रहा है।

रसोई गैस के दाम बढ़ जाने से परेशान हुए सड़क एवं कामकाजी बच्चे और उनके माता-पिता

बातूनी रिपोर्टर बबीता व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

जैसा कि आप सभी को पता ही होगा कि भारत में रसोई गैस के दाम बहुत ही ज्यादा बढ़ चुके हैं। जिसके कारण सड़क एवं कामकाजी बच्चों के अभिभावक और बच्चे दोनों ही बहुत ज्यादा परेशान हैं। बहुत ही मुश्किल से हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने घर का खर्चा निकाल पाते हैं। एक समय का खाना खाने के लिए उनको बहुत सी कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है और वह अपना और अपने परिवार का पेट भरने के लिए चाहे कोई भी मौसम हो वो काम करने की लिए मजबूर होते हैं।

यही हाल हमारे लखनऊ के लवकुशनगर बस्ती के बच्चों के साथ भी है जब हमारे बालकनामा पत्रकार बच्चों से बात कि तो उन्होंने बताया कि यहां के सारे बच्चे बहुत ही मुश्किल से अपने घर का खर्चा चला पाते हैं ऊपर से रसोई गैस का दाम भी बहुत ज्यादा बढ़ गया है जिसके कारण अब हम लोग गैस सिलेंडर नहीं भरा पाते हैं। ऐसी चिलचिलाती धूप में हम लोगों को चूल्हे पर खाना बनाना पड़ता है जिसके कारण हम तो परेशान होते हैं, हमारे साथ साथ हमारे छोटे भाई बहन भी बहुत ज्यादा परेशान हो जाते हैं। अब हम लोग करें तो क्या करें।

रेल हादसों का शिकार होते बच्चे

बातूनी रिपोर्टर सूरज व रिपोर्टर किशन

हमारे पत्रकारों ने पश्चिम दिल्ली के इलाके की विजिट की तो 14 वर्षीय बालक ने बताया, "भैया हम जिस जगह पर रहते हैं वहां पर 1400 से 1500 झुग्गियां है। झुग्गी बस्तियों के बगल से एक रेलवे लाइन भी है जिस पर से 4 से 5 मिनट में रेलगाड़ियां आती जाती रहती है। इस स्थान पर कुछ रेलगाड़ी तो इतनी रफ्तार में आती हैं कि टिन टप्पड़ और पन्नी से बनी हुई झुग्गी तक उड़ जाती हैं। इतना ही नहीं जिन लोगों के कपड़े सूख रहे होते हैं वह तक हवा के कारण उड़ जाते हैं। विस्तार से बात करने के दौरान पता चला कि इस स्थान पर अधिकतर माता-पिता ऐसे हैं जो कि 5 से लेकर 10 साल तक के बच्चों को सुबह से लेकर शाम तक घर पर अकेले छोड़कर काम के लिए निकल जाते हैं। और शाम को ही घर आते हैं। यह बच्चे खेलने के लिए ज्यादा दूर तक नहीं जाते हैं क्योंकि इनके खोने का दर होता हैं। ये बगल से गयी रेलवे लाइन की पटरी पर जाकर बैठ जाते हैं और आपस में खेलने लग जाते हैं। रेलवे लाइन के आगे एक मोड भी है जिस पर रेलगाड़ी आती रहती हैं। हमारे पत्रकारों ने सवाल किया जब रेलगाड़ी आती है तो आपको कैसे पता चलता है कि रेलगाड़ी आ रही है या नहीं? बच्चों ने बताया, भैया कुछ रेलगाड़ी होती है जोकि पहले से ही हॉर्न बजा देती हैं और हमें पता चल जाता है तो हम तुरंत साइड हट जाते हैं और कुछ ऐसी गाड़ी होती हैं जो कि हॉर्न नहीं बजाती है। जिसके कारण अधिकतर बच्चों के साथ हादसे भी हो जाते हैं। अधिकतर बच्चों के साथ ऐसा हुआ भी है जिनके पैर, हाथ कट गए,सिर पर चोट लगना आदि। भैया इस स्थान पर अधिकतर बच्चे खेल भी खेलते रहते हैं और कुछ इतने छोटे बच्चे होते हैं कि उन्हें रेलगाड़ी का हॉर्न भी नहीं समझ आता हैं। जब कोई आसपास का व्यक्ति देख लेता है तो उन बच्चों को साइड कर लेता है, नहीं तो ये बच्चे हादसों का शिकार हो जाते हैं। पत्रकार इस खबर को सुनकर बहुत हैरान हुए।

तपती धूप में काम करते सड़क एवं कामकाजी बच्चे

पृष्ठ 1 का शेष

ड्रिंक्स के बगैर ही सड़कों पर तपती धूप में अलग-अलग तरह के कार्य करते हैं और इसी से अपने परिवार का पालन पोषण करते हैं। यह बच्चे खुद गर्मी में रहकर दूसरों को गर्मी से बचने के साधन मुहैया करवा रहे हैं। जिस उम्र में बच्चों को शिक्षा, पौष्टिक आहार, खेलकूद जैसी सुविधाएं मिलनी चाहिए, उस उम्र में यह बच्चे अपने कंधों पर अपने घरों को चलाने की जिम्मेदारी ढो रहे हैं। यह बात सिर्फ नोएडा या दिल्ली की ही नहीं बल्कि यह आपको किसी भी राज्य या इलाकों में दिख जाएगी।

इतनी गर्मी में रोज बर्फ खरीद कर अपनी प्यास बुझाते सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर अंजली व बालकनामा रिपोर्टर आंचल

इस बढ़ती गर्मी ने हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चों का जीना मुश्किल कर दिया हैं। हमारे बालकनामा के पत्रकार ने लखनऊ की विनायकपुरम बस्ती की विजिट की तो विजिट करने के दौरान यह देखा कि एक बच्चा बर्फ की सिल्ली का एक छोटा टुकड़ा लेकर जा रहा था।

तभी पत्रकार उसके पास गए और उससे बात की। बातचीत के दौरान हमने उस बच्चे से पूछा कि आप यह बर्फ का टुकड़ा कहां लेकर जा रहे हो? बच्चे ने बताया कि दीदी यह बर्फ हम १० रुपए का खरीदकर अपने घर लेकर जा रहे हैं। इतनी चिड़चडाती गर्मी में हर एक इंसान ठंडा पानी पीना चाहता है पर हमारे यहां ना ही बिजली है और ना ही फ्रिज है कि हम ठंडा पानी पी सके। बच्चे ने यह भी बताया कि दीदी हम घर में जो पानी भरकर रखते हैं वह पानी भीषण गर्मी होने के कारण गर्म हो जाता है, जिसको पीने का मन भी नहीं होता है और ना ही उसे हमारी प्यास बुझती है। इसीलिए हमें मजबूरन बाहर जाकर यह बर्फ खरीदना पड़ता है, ताकि हम खाना खाकर ठंडा पानी पी सके और अपनी प्यास बुझा सके। बातचीत की दौरान बच्चों से यह भी बात पता चली कि यह बच्चे दिनभर कूड़ा बीनने का काम करते हैं, जिसको बेचकर इनको जो 10-15 रूपए मिलते हैं उससे यह 5 या 10 रूपए की बर्फ खरीद कर लाते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बच्चों की साथ मिलकर चलती ट्रेन से सरिया चुराने का काम करते हैं पश्चिम दिल्ली की झुग्गियों में रहने वाले लोग

ब्यूरो रिपोर्ट

हमारे पत्रकार बालकनामा अखबार की माध्यम से हर महीने सड़क एवं कामकाजी बच्चों की समस्याओं को आप तक पहुंचाते हैं। ऐसी ही एक खबर है पश्चिम दिल्ली के सड़क एवं कामकाजी बच्चों की। हमारे पत्रकारों ने पश्चिम दिल्ली की 33 बच्चों के साथ उनकी समस्याओं पर मीटिंग की। हर एक बच्चे ने अपनी अपनी परेशानियां बताई। इनमें से एक बच्चे की समस्या बहुत गंभीर थी।

11 वर्षीय तरुण (परिवर्तित नाम) ने बताया "भैया हम जिस जगह रहते हैं वहां पर 60 झुग्गियां है और बगल से रेलवे लाइन भी जा रही है। यहां पर हर 5 से 10 मिनट में मालगाड़ी आती रहती हैं और आकर रुक जाती हैं। मालगाड़ी में कई प्रकार का सामान जैसे प्याज, दाल,चावल, कोयला, कार, ट्रैक्टर, लोहे का सरिया, आदि रहता है। जब इस स्थान पर रेलगाड़ी आकर रुक जाती है तो जिस गाड़ी में लोहे के सरिए होते हैं उस गाड़ी से झुग्गी में रहने वाले बच्चे और बड़े मिलकर सरिया चुराने का काम करते हैं। चाहे दिन हो या रात जब भी मालगाड़ी आती है यह लोग सरिया चुराने लग जाते हैं। गाड़ियों में सरिया लोहे के तार से बंधे होते हैं, जिससे कि उन्हें कोई खोल ना पाए परंतु इस बस्ती के बच्चे और बड़े मिलकर उन लोहे के तार को आरी से काट देते हैं और जितना उनके हाथ में लोहा आ जाता है उतना वह लोग लोहा निकाल लेते हैं और जंगल में फेंक देते हैं। ऐसे स्थान पर लोहे को फेंक देते हैं कि किसी के हाथ ना पड़े। यह बच्चे 14, 15, 16, 17, वर्ष के होते हैं जो चोरी का यह काम करते हैं। जब यह लोग और बच्चे सरिया चोरी करने का काम कर रहे होते हैं तो कोई भी देखने वाला नहीं होता है कि मालगाड़ी में माल है या नहीं और इनमें से एक से दो व्यक्ति और बच्चे आसपास के जगहों पर देखते रहते हैं कि कोई आ तो नहीं रहा। यदि कोई ट्रेन का कर्मचारी चेक करने के लिए आता हैं या कोई पुलिस वाला आ जाता हैं तो ये वहां से तुरंत रफूचक्कर हो जाते हैं। यह बच्चे और बड़े चलती ट्रेन में चढ़ जाते हैं। कभी-कभी यह लोग चलती ट्रेन के शिकार भी हो जाते हैं और काफी चोट भी आती है"।

हमारे पत्रकारों ने बच्चों से सवाल किया कि इस स्थान पर ही ट्रेन क्यों रुक जाती है? बच्चों ने बताया इस स्थान पर ट्रेन इसीलिए रुक जाती है क्योंकि आगे रेड लाइट है और जब रेड लाइट हो जाती है तो ट्रेन आधा से एक घंटा तक रुकी रहती है। इतने में यह है लोग सरिया चुराने का काम कर लेते हैं और कम से कम 20 से लेकर 25 कुंटल सरिया चुरा लेते हैं और इस झुग्गी बस्ती के व्यक्ति लोग इसीलिए कुछ नहीं कहते क्योंकि ये लोग उन्हें मारने की धमकी देने लग जाते हैं।

बच्चों के भविष्य पर पड़ता गलत प्रभाव

बातूनी रिपोर्टर सोनू व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

वातावरण का बच्चों के ऊपर बहुत प्रभाव पड़ता है। जो जिस माहौल में पीएलए बढ़ा आता है उसकी आदतें भी वैसी ही हो जाती हैं। फिर वो माहौल अच्छा हो या फिर बुरा हो। हर बच्चा आपने आस पास के वातावरण में ढल जाता है और वैसे ही व्यव्हार करने लगता है। हमारे लखनऊ के पत्रकार ने पुरनिया बस्ती में रहने वाले बच्चों से मिले और उनके बस्ती में होने वाली समस्याओं को जानने की कोशिश की तो यह बात सामने आई कि जहां पर यह बच्चे रहते हैं, वहां पर आस पड़ोस में रोज लड़ाई झगड़ा होता रहता है जिससे बच्चे बहुत परेशान हो गए हैं। आप पास के लड़ाई झगड़ों से पूरी बस्ती परेशान है। जब भी लड़ाई झगड़ा होता है तो बहुत लोग झगड़े का मजा लेने के लिए इकट्ठे हो जाते हैं, जिसमें हमारे छोटे बच्चे भी शामिल हैं। इन सब चीजों से बच्चों के ऊपर बहुत ही गलत प्रभाव पड़ता है। बच्चों का यह भी कहना है कि इस तरह का वातावरण देखकर अब हमारे छोटे भाई-बहन भी हर एक छोटी बात पर लड़ाई झगड़ा करने लगते हैं और साथ में गाली गलौज भी करने लगते हैं। जिनको देखकर हमें बहुत ही दुख होता है कि बड़ों की गलतियों की वजह से बच्चों के भविष्य पर गलत प्रभाव पड़ रहा है।

बच्चों ने बताई अपनी आपबीती

बातूनी रिपोर्टर बबीता व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

मई-जून के महीने कि तपती धूप और गर्मी से सभी बेहाल हैं। लेकिन हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने घर का खर्चा चलाने के लिए इस धूप और गर्मी को झेल रहे हैं। यह सब कुछ वो बस एक समय की रोटी पाने के लिए कर रहे हैं। लखनऊ के लवकुश नगर की बस्ती के आधे से ज्यादा बच्चे बाहर काम करने के लिए जाते हैं। कुछ बच्चे अपने अभिभावकों के साथ सुबह 6 बजे से 2 बजे तक कूड़ा उठाने का काम करते हैं और कुछ बच्चे बाहर घरों में काम करने के लिए जाते हैं। हमारे बालकनामा पत्रकार ने बच्चों से पुछा कि इतनी गर्मी में कैसे आप खुले आसमान के नीचे काम कर लेते हो तो बच्चों ने बताया कि दीदी हमारा बिल्कुल भी बाहर काम करने जाने का मन नहीं करता है। हम भी चाहते हैं कि हम भी और बच्चों की तरह स्कूल जाएं लेकिन क्या करें मजबूरी है। हमारे अभिभावक अकेले घर का खर्चा नहीं चला पाते हैं, जिसके कारण हमें भी उनका हाथ बटाना पड़ता है। जिससे हम घर का खर्च चलाने में अपने माता-पिता की थोड़ी सी मदद कर सकें। नहीं तो घर चलाने में बहुत ज्यादा समस्या होती है।

'स्ट्रीट टॉक' दूसरे बच्चों के लिए रोल मॉडल बनें सड़क एवं कामकाजी बच्चों का एक अनूठा शो

बातूनी रिपोर्टर उषा, सह रिपोर्टर किशन

हम सभी ने बहुत सारे ऐसे मोटिवेशनल शो, प्रोग्राम और लाइव स्पीचें देखी होंगी जिसके माध्यम से लोग अपने सक्सेस होने की कहानियां सुनाते हैं, अपने स्ट्रगल के बारे में बताते हैं। साथ ही वह यह भी बताते हैं कि किस प्रकार से उन्होंने इतनी कठिनाईओं का सामना करके अपने जीवन को सफलता की शिखर पर ले गए। आज वे इस मुकाम पर हैं कि उनकी स्टोरी पूरी दुनिया सुन रही है। हम भी आपको ऐसे ही एक कार्यक्रम के विषय में बताने जा रहे हैं जो इन्हीं कार्यक्रमों से मिलता जुलता है। लेकिन इस कार्यक्रम की खास बात यह है कि इसमें बड़े लोग नहीं ,बल्कि बच्चे अपने जीवन से जुड़े संघर्षों के बारे में आपको बताएंगे। वे बताएंगे कि किस प्रकार से उन्होंने सभी परेशानियों को झेलते हुए अपने जीवन को बदला और अपने जैसे दूसरे बच्चों के लिए एक रोल मॉडल बनें। इस अनूठे कार्यक्रम का नाम है "स्ट्रीट टॉक", जिसे बीते 5 वर्षो से चेतना संस्था द्वारा आयोजित किया जा रहा है।

12 अप्रैल, यानि इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे पर पांचवा स्ट्रीट टॉक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें दिल्ली, नोएडा, गुड़गांव, लखनऊ आदि जगहों से 10 बच्चों ने भाग लिया। इन बच्चों ने हजारों लोगों के सामने अपने संघर्ष को बड़ी ही बेबाक और बहादुरी के साथ रखा। अब तक लगभग 50 बच्चे इस स्ट्रीट टॉक शो में भाग ले चुके हैं। अगर आप भी इन बच्चों को सुनना चाहते हैं तो आप चेतना संस्था और बालकनामा के फेसबुक पेज पर विजिट करें और इन बच्चों की संघर्ष की कहानियां देखें। ये बच्चे अपने आप को समाज की मुख्यधारा से जोड़ पाएं और अपने जीवन को बदलने में कामयाब रहे।

बकरियों की देखभाल करें या स्कूल जाएं

बातूनी रिपोर्टर सुनील व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

सड़क एवं कामकाजी बच्चे दिन रात कड़ी मेहनत करके अपना पेट पालते हैं। उनको बहुत से कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है। इतनी मुश्किलों का सामना करने की बावजूद ये बच्चे जानवरों से बहुत प्यार करते हैं और आपने घर में कुछ जानवर पालकर भी रखते हैं। अपने साथ साथ उनको इनका भी ध्यान रखना पड़ता है। इन जानवरो की वजह से वह कहीं भी नहीं जा पाते। ऐसा ही हाल लखनऊ के विनायकपुरम की बस्ती

के बच्चों का भी है। हमारे बालकनामा पत्रकार ने कम्युनिटी विजिट की दौरान देखा कि एक बच्चा पेड़ के ऊपर चढ़कर बकरी के लिए पत्तियां तोड़ रहा था और नीचे नाला बना था। अगर कोई भी डाल टूट जाती तो उसी नाले में गिर जाता। पर वह बच्चा इस बात से अनजान था और अपनी बकरी की लिए खाना जुटाने में लगा था। जब वह नीचे उतर के आया तो पत्रकार ने उस बच्चे से पूछा कि आप स्कूल नहीं जाते हो? तो बच्चे ने बताया, कि नहीं दीदी हम स्कूल नहीं जा पाते हैं। क्योंकि हमें अपने घर की बकरियों की देखभाल करनी पड़ती है और उनके लिए चारा लेने जाना पड़ता है। बच्चे ने बताया कि दीदी हमरे सारे दोस्त स्कूल जाते हैं तो हमारा भी स्कूल जाने का मन करता है लेकिन हमारे माता-पिता बाहर घरों में काम करने के लिए चले जाते हैं और हम ही घर पर अकेले रह जाते हैं। इसीलिए हमको ही हमारी बकरियों की देखभाल करनी पड़ती है।

बिना किसी पहचान प्रमाण पत्र के बच्चों से कराते हैं फैक्ट्रियों में काम

ब्यूरो रिपोर्ट

हम आपको सड़क एवं कामकाजी बच्चों की एक ऐसी खबर बताते हैं जिसे सुनकर आप भी आश्चर्यचकित हो जाएंगे। आप लोगों ने बहुत सी फैक्ट्रियों में बच्चों को काम करते हुए देखा होगा। हमारे पत्रकारों ने 8 बातूनी रिपोर्टर के साथ मिलकर यह खबर निकाली है। बच्चों ने बताया "भैया हमारे आसपास के बच्चे, हमारे बड़े भाई और बहन भी फैक्ट्री में काम करने के लिए जाते हैं। जहाँ वो काम करते हैं अधिकतर उन फैक्ट्रियों में खिलौने के समान बनाने का काम होता है जैसे ट्रैक्टर, कार ,गैस, चूल्हा,सिलेंडर आदि।

यह बच्चे सुबह के 9:00 बजे से लेकर शाम के 6:00 बजे तक फैक्ट्री में काम करते हैं। हम जब किसी कंपनी या फैक्ट्री में नौकरी करने के लिए जाते हैं तो हमसे आधार कार्ड या वोटर आईडी कार्ड एक पहचान की प्रमाण की रूप में माँगा जाता है। लेकिन जिस फैक्ट्री में यह बच्चे काम करने के लिए जाते हैं उस फैक्ट्री में बिना किसी पाचन पत्र को देखे बच्चों को काम पर लगा लेते हैं। जब उन फैक्ट्रियों में चेकिंग करने वाले आते हैं तो बच्चे इधर उधर छिपने के लिए भागते हैं। कुछ बच्चे कार्टून में दुबक जाते हैं, कुछ बच्चे बाथरूम में तो कुछ कमरों। तब भी चेकिंग करने वाले उन बच्चों को अनेक स्थानों से

ढूंढ लेते हैं, उनसे बातचीत करते हैं और बच्चों के आधार कार्ड भी चेक करते हैं।

जब बच्चों के आधार कार्ड में उम्र कम होती है तो बच्चों को मारते डांटते और गंदी-गंदी गालियों का प्रयोग भी करते हैं और जेल ले जाने की धमकी भी देते हैं। परंतु मालिक उन चेकिंग करने वाले व्यक्तियों से पैसे का लेनदेन करके मसला सुलझा लेते हैं। ये लोग हर महीने चेकिंग करने के लिए आते रहते हैं और हमें बोलकर भी जाते हैं कि अब की बार यहां पर नजर मत आना। लेकिन हमें मजबूरन यहां काम करना पड़ता है। अगर फैक्ट्री का मालिक चेकिंग करने वालों को जितने पैसे देता है उतने पैसे हम लोगों से काम करवा कर वापिस ले भी लेता है। हमारे पत्रकारों ने बच्चों से सवाल किए कि आप लोग काम पर क्यों जाते हो? और कौन भेजता है? तो बच्चों ने बताया भैया हमारे घर में हमारे माता-पिता तो काम करते हैं परंतु ज्यादा सदस्य होने के कारण हमें भी घर की आर्थिक स्थिति को देखकर काम करना पड़ता है। हममें से कुछ बच्चे काम करने के लिए तैयार भी हो जाते हैं, लेकिन कुछ बच्चों का काम में मन ही नहीं लगता। इसीलिए हमें मजबूरन जाना पड़ता है। फैक्ट्री के कुछ लोग हमारे माता-पिता से बात करके हमें जबरदस्ती काम कराने के लिए ले जाते हैं।

डेढ़ लाख रुपए की रिश्वत देकर खाली होने से बचायी 3000 से अधिक झुग्गियां

ब्यूरो रिपोर्ट

दिल्ली के अनेक स्थानों पर सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने माता-पिता और परिवार के साथ झुग्गी बस्तियों में रहते हैं। इन बस्तियों में अधिकतर कबाड़ा बिनना, कबाड़ा छांटने का काम होता है। पत्रकार इन झुग्गियों में रहने वाले बच्चों से मिले और बात की तो बच्चों ने बताया,"भैया यहां पर 3000 से अधिक झुग्गियां हैं और इस स्थान पर अधिकतर बच्चे अपने माता-पिता, दादी-दादा, नानी-नाना के साथ कबाड़ा छांटने और कबाड़ा बिनकर लाने में मदद करते हैं। बच्चों का पूरा दिन यह काम करके ऐसे ही बीत जाता है। बच्चों ने बताया कि कुछ महीने पहले यहां पर सरकारी पुलिस ऑफिसर आए थे और झुग्गी खाली करने का नोटिस भी चिपकाकर गए। उनका कहना था कि जिस स्थान पर आप रह रहे हो वह सरकारी जगह है और इस स्थान पर कमर्सिअल बिल्डिंग बनेगी। तो यह सुनकर झुग्गी के बच्चे और माता-पिता भी काफी हैरान हुए कि अब हम लोग कहां जाएंगे। यहां पर जितनी भी झुग्गियां है उनमें से 5 से 6 झुग्गियां का एक ठेकेदार होता है और पूरी 3000 झुग्गी के ठेकेदारों ने मिलकर सलाह की कि पुलिस वालों से बात करते हैं कि वह पैसे लेकर मामले को रफा दफा कर दें।

सभी झुग्गी के ठेकेदारों ने पुलिस वाले से जाकर पैसे की लेनदेन को लेकर बात की तो वह पुलिस वाले मान तो गए पर उन लोगों ने डेढ़ लाख रुपए की मांग की। उन्होंने यह भी बोला यदि समय पर पैसा नहीं दे पाते हो तो झुग्गियों को खाली कर देना। सभी ठेकेदारों ने तीन तीन हजार रुपए इकट्ठे किए और जाकर पुलिस वालों को दिए। झुग्गी बस्ती वालों ने पुलिस वालों से यह भी बोला कि अब हम 6 साल से पहले झुग्गी खाली नहीं करेंगे।

नवरात्रि के त्यौहार का सड़क एवं कामकाजी बच्चों को होता है बड़ी बेसब्री से इंतजार

बातूनी रिपोर्टर कृष्णा व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

नवरात्रि का त्यौहार आते ही हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चों के चहरे पर अलग ही खुशी दिखने लगती हैं। इस त्यौहार को बच्चे बड़े धूमधाम से मनाते भी हैं और इसका इंतज भी करते हैं। नवरात्री की आने से बच्चे इतना उत्साहित क्यों होते हैं, इसके बारे में जब हमारी बालकनामा की पत्रकार ने माड़ियाव बस्ती में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बात की तो उन्होंने बताया कि जब भी नवरात्रि आती है और खासतौर पर जब अष्टमी और नवमी का दिन आता है तो बच्चे बहुत खुश हो जाते हैं क्योंकि उस दिन बच्चियों को कोठियों और मंदिरों में कन्या खाने की लिए बुलाया जाता हैं। जब वह कन्या खाने जाती हैं तो उन्हें फल और अच्छे अच्छे पकवान खाने को मिलते हैं और साथ में रुपये और गिफ्ट भी मिल जाते हैं। जिससे उनका इस महीने का घर का खर्चा चलाना और भी आसान हो जाता है। साथी बच्चों ने यह भी बताया इन दो दिनों में हमारे घर में खाना भी नहीं बनता है। कन्या खाकर जो खाना बच जाता है उसे हम घर लेकर आते हैं। इस तरह उस दिन हमारे घर में खाना नहीं बनता है। साथ ही बच्चों ने यह भी खा कि दीदी वैसे तो सभी दिन हमारे लिए मुश्किल वाले होते हैं लेकिन जब नवरात्रि के दिन आते हैं तो हमें में काफी खुशी मिलती है।

मिड डे मील में बने भोजन में कीड़े निकलने से बच्चों ने भोजन करने से किया इंकार

बातूनी रिपोर्टर आशा व रिपोर्टर किशन

हमारे पत्रकारों ने सरकारी स्कूल में मिलने वाली सुविधाओं के बारे में वहां पढ़ने वाले बच्चों से बात की तो कुछ बच्चों ने बताया कि "भैया सरकारी स्कूल में बच्चों को सरकार की तरफ से जूते, बैग, ड्रेस, खाना आदि की सुविधाएं दी जाती हैं। स्कूल में मिलने वाले मिड दे मील की भोजन में दाल, चावल, आलू सोयाबीन की सब्जी, दूध, खिचड़ी, केला और रोटी आदि मिलते हैं। पर भैया हमारे स्कूल में भोजन पहले काफी अच्छी तरह से बनाते थे। पहले भोजन में कोई शिकायत नहीं आती थी और हम उस भोजन को बिना शिकायत के खा लेते थे। परंतु अब न तो भोजन ढंग का मिलता है और ऊपर से दाल चावल में छोटे-छोटे कीड़े भी मिल जाते हैं। ये समस्या बार-बार होने पर हम बच्चों ने स्कूल का भोजन खाना ही छोड़ दिया। अब हम अपने घर से खाना लेकर आते हैं। दूध की बात करें तो दूध मिलने के समय दूध में दूध कम पानी अधिक होता है जो पीने में बिल्कुल स्वादिष्ट नहीं लगता है। कुछ बच्चे स्कूल के बनें दाल चावल को खा तो लेते हैं और जब अचानक उसमें कीड़ा मिल जाता है तो वह बच्चे भी उस भोजन को खाना छोड़ देते हैं। कीड़ा देखने के बाद भोजन को खाने का मन ही नहीं करता है। पर खिचड़ी रोटी और केले में कोई शिकायत नहीं आती है तो हम खिचड़ी रोटी और केले को खा लेते हैं। हमारे पत्रकारों ने बच्चों से सवाल किया कि आपने यह बात अपनी प्रिंसिपल मैम को क्यों नहीं बताई। बच्चों ने बताया भैया यह बात मैम को कब की पता है, परंतु वह इस पर कुछ भी कार्यवही नहीं करती हैं इसीलिए हम लोग दाल चावल के भोजन को नहीं खाते हैं।

बच्चों ने सेवइयां खिलाकर दी ईद की मुबारकबाद

रिपोर्टर रवि

दोस्तों भारत में हर त्यौहार को काफी धूमधाम से बनाया जाता है। और अगर बात ईद,होली, दिवाली रक्षा बंधन जैसे त्यौहारों की हो तो फिर क्या ही कहने। हालांकि जब से इस कोविड-19 की एंट्री हुई है तब से अधिकांश त्यौहार लोगों ने बस यूंही मनाए है। लेकिन इस साल कोविड की रफ्तार में काफी कमी आई है और इसी वजह से लगता है कि अब हर त्यौहार पहले की तरह ही धूमधाम के साथ मनाए जाएंगे। जिसकी शुरूआत ईद से हो गई है। इस बार ईद के इस पावन अवसर पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने आपस में एक दूसरे को सेवइयां खिलाकर एवं ईद की शुभकामनाएं देकर पूरी सामाजिक दूरी को ध्यान में रखते हुए ईद मनाई। सभी बच्चों को यह भी बताया गया कि हम लोग ईद क्यों मनाते हैं और इस त्यौहार के क्या मायने हैं। सभी बच्चों ने एक दूसरे को ईद की शुभकामनाएं दी और कुछ बच्चों ने गाने गाए, पोयम सुनाई, एवं नृत्य डांस भी किए और इस सेलिब्रेशन में चार चांद लगाए।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

महंगाई बढ़ने से काम हुआ मंदा और घर का खर्चा चलाना हुआ मुश्किल

बातूनी रिपोर्टर रिजनेश व रिपोर्टर किशन

नोएडा में रहने वाले अधिकतर सड़क एवं कामकाजी बच्चे गोलगप्पे बेचने का काम करते हैं। इन बच्चों की उम्र १२ से १५ साल हैं। कोरोना की समय से ही इन सभी की घरों की हालत बहुत खराब चल रही हैं। 12 वर्ष के बालक ने बताया, "जैसा कि आप सब जानते हो लॉकडाउन के बाद कितनी महंगाई बढ़ गई है और हर समान की दाम भी बढ़ गए हैं। हम सभी गोलगप्पे का काम करते हैं। गोलगप्पे को बनाने के लिए सूजी, आटा, रिफाइंड और गैस की आवश्यकता होती है जो अब बहुत महंगी हो गई है। लॉकडाउन से पहले रिफाइंड सौ रुपए का आता था जो कि अब 140 रूपए का हो गया है। गैस जो 70 रूपए किलो मिलती थी अब 95 रूपए किलो हो गई है। लॉकडाउन से पहले हम लोग आटे के गोलगप्पे 10 रूपए के आठ और सूजी के पांच देते थे। लेकिन महंगाई होने के कारण अब आटे के चार गोलगप्पे और सूजी के तीन गोलगप्पे देते हैं। महंगाई होने के कारण गोलगप्पे बहुत कम बिकने लगे हैं जिसके कारण हमें घर चलाने में बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। जिस जगह पर हम लोग अपनी दुकान लगाते हैं वहां के चौकी इंचार्ज को भी हमें महीने के पंद्रह सौ रुपए देने पड़ते हैं और जब कभी कमेटी आ जाती है तो हमें वहां से अपना सामान लेकर भागना पड़ता है। जब हम जल्दबाजी में वहां से भाग रहे होते हैं तो हमारे गोलगप्पे का पानी और गोलगप्पे भी गिर जाते हैं जिसके कारण बहुत नुकसान भी हो जाता है।

बुरी संगती में पड़कर गलत रास्तों की ओर बढ़ते नन्हें कदम

बातूनी रिपोर्टर सोनिया, रिपोर्टर किशन

संगत एक अच्छी और बुरी भी आदत है। बड़ों के, भाई बहनों और मित्रों के व्यवहार और तौर-तरीकों का बच्चों पर बहुत ज्यादा असर पड़ता है। हमारे पत्रकारों ने नोएडा के कामकाजी बच्चों के साथ बैठक का आयोजन किया, जिसमें 30 बच्चों ने भाग लिया। 10 वर्ष की बालिका ने बताया, "भैया हमारे यहां पर काफी ऐसे बच्चे हैं जिनके दोस्त बहुत बड़े-बड़े हैं। जिनकी उम्र 20 से लेकर 22 वर्ष तक है। ये बच्चे अपने मित्रों के साथ रह कर गलत संगती में पड़ गए हैं। जैसे वो पुरे दिन नशे में धुत रहते हैं वो भी उनके साथ रहकर गुटका, तंबाकू, सिगरेट, दारू,आदि का बहुत नशा करने लगे हैं। ये नशीले पदार्थ उनको दुकानों पर खुलेआम मिल जाते हैं और वे अपने मित्रों के साथ रहकर बेझिझक नशा करते हैं। इन बच्चों के माता-पिता सुबह से काम पर चले जाते हैं और उनके जाने की बाद ये बच्चे घर पर अकेले रहते हैं। फिर क्या उस समय ये अपने दोस्तों के साथ घूमते और नशा करते हैं। शाम को जब इनके माता-पिता काम से घर पर आते हैं तो उनको कानो कान खबर तक नहीं पहुँचती कि उनको जो पैसे घर की काम के लिए मिलते हैं, उन्हीं पैसों से वे दोस्तों के साथ मिलकर नशे में उड़ा देते हैं। उनके बड़े मित्र सरकारी ठेकों पर जाकर दारू लेकर आते हैं और जब कभी खुद के पास पैसे नहीं होते तो दोस्तों से उधार लेकर भी नशा करते हैं।

बच्चों ने रखी अपनी बातः बच्चों को परिवहन की सुविधा प्रदान करे सरकारी स्कूल

बातूनी रिपोर्टर सीमा व रिपोर्टर किशन

हमारे जीवन में शिक्षा का बहुत महत्व है। अपनी स्कूली शिक्षा के माध्यम से ही हम मानसिक, नैतिक और शारीरिक शक्ति का विकास करना सीखते हैं। बिना उचित शिक्षा के एक व्यक्ति अपने जीवन के सभी शैक्षिक लाभों से वंचित रह जाता है। शिक्षा निजी और पेशेवर जीवन में सफलता की एकलौती कुंजी है। शिक्षा हमें सोचने समझने की शक्ति प्रदान कराती है। हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे शिक्षा प्राप्त तो करना चाहते हैं लेकिन यह हमारे लिए इतनी आसान बात नहीं है। हमें पढ़ाई के लिए बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन समझ नहीं आता कि इन परेशानियों का समाधान तो है परंतु इसके बारे में सोचने का समय किसी के पास नहीं है। जब हमने ऐसे ही कुछ सवाल इन बच्चों से बातचीत के दौरान किए तब एक-एक करके बच्चों ने बताया कि "भैया हम नोएडा के झुग्गी बस्ती में रहते हैं। इस स्थान पर लगभग 30 बच्चे हैं जो कि सरकारी स्कूल में पढ़ने के लिए जाते हैं, लेकिन यहां से हमारा स्कूल 7 किलोमीटर दूरी पर है। कुछ बच्चों के पास साइकिल और पिताजी की मोटरसाइकिल जैसी सुविधा है तो वह बच्चे अपनी साइकिल और मोटरसाइकिल से स्कूल चले जाते हैं लेकिन जिन बच्चों के पास ऐसी कोई सुविधा नहीं है उन बच्चों को पैदल स्कूल जाना पड़ता है। स्कूल का समय भी सुबह 7:30 से लेकर 12:00 बजे तक का है। हम बच्चों को स्कूल जाने के लिए घर से ६ बजे निकलना पड़ता है तब जाकर हम डेढ़ घंटे में स्कूल पहुंच पाते हैं। बातचीत के दौरान बच्चों ने यह भी बताया कि हमारे आसपास के एरिया में ऑटो, ई-रिक्शा जैसी सुविधा नहीं है और काफी दूर जाकर हमें ई रिक्शा और ऑटो मिलता है। और अगर हमें ऑटो मिल भी जाता है तो वो स्कूल ले जाने के लिए सौ रुपए मांगते हैं इतने पैसे हमारे पास नहीं होते कि हम हम ऑटो का किराया दे सकें। इस कारण अधिकतर बच्चे जिनके पास साइकल, मोटरसाइकिल नहीं है वो स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। बच्चों का कहना है कुछ इस विषय पर ध्यान दिया जाय और सरकारी स्कूल द्वारा ही कोई सरकारी साधन की सुविधा हमें दी जाये ताकि हम बच्चे रोजाना स्कूल जा पाएं।

घर की जिम्मेदारियों की चलते स्कूल जाने के बजाय पानी के पाउच बेचता बच्चा

बातूनी रिपोर्टर गौरी व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

डालीगंज बस्ती में विजिट करने के दौरान बालकनामा पत्रकार आंचल ने एक बच्चे से बात की, जिसकी उम्र 8 साल है। उस बच्चे ने बताया कि दीदी मैं बड़ा परेशान रहता हूं क्योंकि मेरे पापा इस समय कोई काम नहीं करते हैं। पहले हमारे पापा खाना बनाने का ठेला लगाते थे पर अब वह भी बंद हो गया। क्योंकि जहां हमारे पापा खाना बनाने का ठेला लगाते हैं थे उस जगह पर दूसरे लोग कब्जा करना चाहते हैं। इसलिए वहां पर अब पापा को दुकान लगाने को नहीं मिलता है। जिसकी वजह से हमारे घर की कमाई बिल्कुल बंद है। मेरी बड़ी बहन की तबियत भी खराब रहती है। दुकान बंद होने के गम में पापा शराब भी पीने लगे हैं। कहीं बाहर भी नहीं जाते हैं और तो और उनका स्वास्थ्य भी खराब रहने लगा है। अब घर चलाने के लिए सारा परिवार मुझ पर ही निर्भर है। अपने परिवार का पेट भरने के लिए मैं इस कड़ी धूप में सारा दिन सड़क पर खड़े होकर पानी के पाउच बेचता हूं। मेरे बड़े भैया भी इस समय कुछ कमा नहीं पाते इसलिए उनका खर्चा भी हम ही देख रहे हैं। घर चलाने के चक्कर में मेरी पढ़ाई बिल्कुल बंद हो गई है। मैं स्कूल नहीं जा पाता हुँ, स्कूल की टीचर हर रोज हमारे पास फोन करती हैं और हमसे पूछती हैं कि आप स्कूल क्यों नहीं आते हो? तो मुझे कोई ना कोई बहाना बताना पड़ता हैं। मैं उनको क्या बताऊं मुझे समझ में नहीं आता। अब अगर मैं स्कूल जाने लगा तो मेरे परिवार का क्या होगा? इसी मजबूरी के कारण मैंने स्कूल जाना बंद कर दिया है। मुझे पता है कि पढ़ाई करने से हमारा भविष्य बनेगा, लेकिन मैं आपने मन को मारकर पानी के पाउच बेचने चला जाता हूं। मेरे सपने टूटते जा रहे हैं और आगे कोई रास्ता भी नहीं दिखाई दे रहा है। जब बड़े हो जाएंगे तब स्कूल कैसे जाएंगे इसीलिए मैं चाहता हूं कि पापा को कोई दूसरी नौकरी या काम मिल जाए ताकि मैं आगे पढ़कर लिखकर अच्छा काम कर सकूं।

क्या 2025 तक बाल मजदूरी की समस्या का समाधान संभव है?

रिपोर्टर किशन

वर्षों से चली आ रही बाल मजदूरी के बारे में जितनी बात करें वो कम है। हम सब जानते हैं कि दिन पर दिन बाल मजदूरी घटने की बजाय बढ़ती ही जा रही है। इसका अंत कब होगा ये तो किसी को नहीं पता है लेकिन इस समस्या का क्या समाधान हो सकता है इसके बारे में हमारी बालकनामा टीम ने 7 मई को एक सभा में भाग लिया। इस सभा में अलग-अलग स्थानों जैसे लखनऊ, दिल्ली, नोएडा, महाराष्ट्र आदि के सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने भाग लिया। मीटिंग में कई स्थानों से आये भैया और दीदी ने बच्चों से बाल मजदूरी को खत्म करने के लिए सरकार को क्या करना चाहिए इस पर सवाल किए। एक-एक करके बच्चों ने बाल मजदूरी के बारे में अपने विचार रखे। बच्चों ने बताया कि बाल मजदूरी को खत्म करने के लिए सरकार द्वारा सड़क एवं कामकाजी बच्चों को फ्री शिक्षा मिलनी चाहिए। जब तक बालक या बालिका शिक्षा प्राप्त करना चाहते/चाहती हैं सरकार को उसमें मदद करनी चाहिए। जिन बच्चों के माता-पिता बेलदारी के काम पर जाते हैं और पुरे दिन मजदूरी करने के बाद उनको सिर्फ ४०० रूपए मिलते हैं, जिससे घर में ६ से 8 सदस्य होने के कारण घर का खर्चा नहीं चल पाता है। सरकार को चाहिए कि एक ऐसा कानून बनाए जिसमें लेबर का मेहनताना ४०० रूपए से बढ़ाकर ८०० रूपए कर देना चाहिए, जिससे कि वह अपने घर का पूरा खर्चा चला सके और बच्चों को काम पर ना जाना पड़े। सरकार को बच्चों के अभिभावकों के खिलाफ भी ऐसी गाइडलाइंस निकालनी चाहिए कि यदि कोई भी माता-पिता अपने बच्चों को जबरदस्ती काम पर भेजता है तो उन पर सख्त से सख्त कार्रवाई हो। जो बच्चे अनाथ हैं और सड़कों पर रहकर, कामकाज करके अपना जीवनयापन करते हैं, उन बच्चों के लिए भी सरकार को ऐसी गाइडलाइंस निकालनी चाहिए जिससे कि उन बच्चों को काम ना करना पड़े और उनके रहने और शिक्षा की जिम्मेदारी सरकार की हो। सभा में यह भी जानकारी दी गयी कि कुछ दिनों में विदेश में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की बाल मजदूरी को लेकर एक महत्वपूर्ण सभा का आयोजन किया जाएगा और जिसमें सन 2025 तक बाल मजदूरी के समाधान का हल निकाला जाएगा।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

पिता की मौत के बाद स्कूल जाने के बजाय काम पर लग गया सूरज

रिपोर्टर ज्योति

आउटरीच के दौरान बालकनामा पत्रकार कि मुलाकात नोएडा में रहने वाले सूरज (परिवर्तित नाम) से हुई। सूरज इतनी कम उम्र में जिन मुश्किलों का सामना करके अपने परिवार कि जिम्मेदारियां उठा रहा हैं वो बहुत ही सराहनीय हैं। सूरज ने बताया कि पापा जी जब से खत्म हुए उसका स्कूल छूट गया। घर कि इतनी जिम्मेदारियां है कि उसे मजबूरी में स्कूल छोड़कर काम करना पड़ा। सूरज ने बताया कि जब मेरे पापा जिन्दा थे तब मैं स्कूल जाता था और बहुत खुश था। लेकिन किसी कारणवश मेरे पापा की मृत्यु हो गई और उसके बाद मुझे स्कूल छोड़ना पड़ा क्योंकि घर चलाना था और ना ही मेरा कोई बड़ा भाई है और ना ही कोई बड़ी बहन। इसी वजह से मुझे काम करना पड़ा और मैं कभी छोले भटूरे की दुकान में काम करता हूं, कभी कचोरी की दुकान में काम करता हूं। जैसा मौसम होता है वैसे ही मैं अपना काम भी बदलता रहता हूं। गर्मी के मौसम में गन्ने का जूस बेचने का काम करता हूं, जिसमें सुबह से लेकर शाम तक धूप में खड़े होकर गन्ने का जूस बेचना पड़ता है तब जाकर मुझे दिहाड़ी मिलती है। इससे ही मेरा घर चलता है और मम्मी जी भी मेरी काम करती हैं तो पापा के इलाज के लिए जो कर्ज लिया था उसका भी भुगतान करना पड़ता है। इसी तरह से पूरे दिन काम करके हम अपना घर चलाते हैं। सूरज ने बताया कि मेरा पढ़ाई करने का बहुत मन करता है पर घर की स्थिति खराब होने के कारण मैं पढ़ाई नहीं कर पाता हूं'

बहकावे में आकर ब्लेड से अपना हाथ काट लेते हैं मासूम बच्चे

रिपोर्टर ज्योति

बालकनामा पत्रकार को नोएडा विजिट के दौरान पता चला कि यहां की यहां की झुग्गियों में रहने वाले काफी बच्चे पढ़ाई भी करते हैं और काम करके अपना घर भी चलाते हैं। लेकिन इनके साथ-साथ इन झुग्गियों में कुछ ऐसे दर्दनाक हादसे भी हो रहे हैं जिनके बारे में सुनकर आप भी हैरान हो जायेंगे। विजिट के दौरान पत्रकार को सूरज (परिवर्तन नाम) ने बताया कि यहां पर 19 से 21 वर्ष की आयु के बहुत लड़के हैं जो किसी से प्यार मोहब्बत कर बैठते हैं और जब उसमें नाकाम हो जाते हैं या उनके साथ कुछ बुरा हो जाता हैं तो वो लोग इसकी सजा खुद को देने के लिए अपने हाथ को ब्लेड से काट देते हैं। ऐसे करने से उनके हाथों पर बहुत गहरे जख्म हो जाते हैं और यह उनके लिए अतयधिक पीड़ादायक भी होता हैं। इन सबका बुरा प्रभाव हमारी झुग्गियों में रहने वाले छोटे-छोटे मासूम बच्चों के अंदर भी पड़ रहा है। सूरज ने यह भी बताया कि इन बच्चों ने ये सब अपने बड़े भैया को देखकर सीखा हैं। जैसे वो लोग प्यार मोहब्बत में अपना हाथ काट लेते हैं वैसे ये भी बिना सोचे समझे अपना हाथ काट लेते हैं। ऐसा करने से इन बच्चों को दर्द और तकलीफ भी बहुत होती हैं। ये सब सुनने के बाद पत्रकार ने यहां रहने वाले बच्चों के साथ एक छोटी सी मीटिंग रखी, जिसमें सभी बच्चों को बताया कि यह हाथ काटना, खून निकालना, खुद को तकलीफ में डालना बहुत गलत है। यह उम्र पढ़ाई-लिखाई करके आगे बढ़ने की है ताकि जीवन में कुछ अच्छा बन पाएं। इन सब चीजों में कुछ नहीं रखा है और बच्चों को शपथ भी दिलाई कि आज के बाद वो अपने हाथ नहीं काटेंगे और ना किसी बड़े भैया को देखकर उनके जैसा गलत काम करने कि कोशिश करेंगे।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बढ़ती महंगाई के बोझ तले दबता बचपन: कूड़ा-कबाड़ा बीनकर घर में मदद करनी पड़ती है

बातूनी रिपोर्ट बबीता व रिपोर्ट संगीता, लखनऊ

कभी-कभी घर के हालात ऐसे हो जाते हैं कि जिन्हें देखकर बच्चे बहुत परेशान हो जाते हैं और बच्चों को मजबूरी में बाहर काम करने के लिए निकलना पड़ता है। आलम यह होता है कि खुद उनके माता-पिता ही उन्हें काम पर भेजने की कोशिश करने लगते हैं। बच्चों का काम पर जाने का एक मुख्य कारण दिन पर दिन बढ़ती महंगाई और परिवार का ठीक प्रकार पालन-पोषण न हो पाना है। ऐसे में काम भले ही कितना खतरनाक क्यों ना हो फिर भी बच्चे पैसों के कारण उस काम को करने के लिए निकल पड़ते हैं। ऐसा ही हाल हमारे लखनऊ के लवकुश नगर बस्ती के बच्चों का भी है। जब हमारी बालकनामा पत्रकार वहां पर बैठक के लिए गयी तो देखा कि एक बच्चा कबाड़ चुन रहा था और वह गंदे नाले में बड़े कबाड़ उठाने की कोशिश कर रहा था। जब पत्रकार ने उस बच्चे के पास जाकर उससे बातचीत करने की कोशिश करी तो वह घबरा गया, लेकिन थोड़ी देर बाद बच्चे की हिचकिचाहट दूर हुई। बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ और पत्रकार ने बच्चे की परेशानियों के बारे में जानने की कोशिश की। पत्रकार ने बच्चे से पूछा कि आप कबाड़ा बीनने का काम क्यों कर रहे हो और क्या आप स्कूल जाते हो? तब उस बच्चे ने अपनी समस्या बताते हुए कहा कि दीदी हम स्कूल नहीं जाते हैं और कूड़ा बीनते हैं। मेरे घर में मेरे पापा नहीं है जिसके कारण हमारी मम्मी को अकेले घर का खर्चा चलाना पड़ता है। हम भी उनकी मदद करने के लिए कबाड़ थोड़ा बहुत चुन कर शाम को बेचते हैं और जो भी पैसे मिलते हैं वह हम अपने घर में दे देते हैं। इससे घर खर्च में हमारी मम्मी की थोड़ी-बहुत मदद हो जाती है। हम ऐसे ही दिन में कई बार कूड़ा बटोरने जाते है और 20-30 रुपये का कबाड़ बेच लेते हैं। बच्चे से बात करने पर पता चला कि बच्चा शराब की दुकान के आस पास की बोतल भी बीनता है और घरो से कूड़ा लेकर उसमे से भी कबाड़ चुनता है।

पार्कों में बैठकर कपल करते हैं अश्लील हरकतें: अथॉरिटी द्वारा कपल को लेकर बनाएं जाएं सख्त नियम

रिपोर्टर ज्योति

नोएडा कि सड़कों पर बहुत सारे बच्चे आपको गुलाब का फूल, सॉक्स, पेन, मास्क, खिलौने बेचते, भीख मंगाते, कबाड़ा बीनने आदि काम करते हुए दिख जायेंगे।

आउटरीच के दौरान बालकनामा पत्रकार को पता चला कि नोएडा में एक मल्टी लेवल पार्किंग के पास एक छोटा सा पार्क है, जिसमें सभी लोग आकर लंच करते हैं। इस पार्क में झूला भी हैं जिसमें बच्चे झूलते रहते हैं, खेलते रहते हैं। बच्चों ने बताया कि ये पार्किंग का पार्क है इसलिए यहां पर कपल लोग भी बैठते हैं जो अश्लील हरकतें करते हैं। जबकि यहां पर उनका आना अलाउड भी नहीं है फिर भी कहीं से भी ये कपल आ जाते हैं। उनकी ये हरकते देखकर बच्चे भी वैसी हरकतें करने लगते हैं।

एक बार तो हमने एक कपल को बोला कि आप लोगों के लिए यहां आना मना हैं तो आप यहां क्यों आते हैं। अगर आपको यही सब करना होता है तो बहुत सारे पार्क हैं, जिसमें आप लोग जा सकते हैं। इतना बोलते ही वह कपल ने बोला कि आप लोगों का इसमें क्या जा रहा है। हम कुछ भी करें और उसने गाली गलौज करके हमें भगा दिया। बच्चों का कहना हैं कि हम चाहते हैं कि पार्कों की अथॉरिटी द्वारा कपल को लेकर कुछ दिशा निर्देश होने चाहिए ताकि वो पार्क में बैठकर ऐसी हरकतें न करें कि इसका बच्चों पर भी बुरे प्रभाव पड़े।

सिलेंडर से लगी आग से कपड़े, राशन और पैसे हुए जलकर राख

बातूनी रिपोर्टर गौरव, वह रिपोर्टर किशन

हम सभी की घरों में खाना बनाने के लिए गैस सिलेंडर का इस्तेमाल किया जाता है। ये सभी चीजें जितनी आरामदायक होती हैं उतनी ही खतरनाक भी। अगर सावधानी नहीं बरती तो इनसे आग लगने का खतरा बना रहता है। इसके लिए एक छोटी सी चिंगारी ही काफी होती है। ऐसा ही हाल नोएडा सेक्टर 81 के आसपास बनी झुग्गियों का हुआ। बस छोटी सी चिंगारी ने इस बस्ती को राख में तब्दील कर दिया। यह खबर मिलते ही हमारे पत्रकार यहां रहने वाले लोगों से मिलने पहुंचे और तत्काल स्थिति का जायजा लिया। पत्रकार ने बच्चों से बात करके उनकी समस्याओं को जानने की कोशिश की। तब एक बालक शाहीनूर (परिवर्तित नाम) ने बताया भैया हमारी बस्ती में रहने वाले अधिकतर लोग कबाड़े का काम करे हैं। हमारे घर में भी हम सभी कबाड़े का ही काम करते हैं। बहुत सारा बेकार सामान और गन्दगी के कारण हमारी झुग्गी बस्तियों में बहुत बड़ी तादात में चूहे भी पाए जाते हैं। ये कोई मामूली चूहे नहीं होते हैं। ये बहुत बड़े होते हैं, जिसके कारण हमें और भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। एक दिन हमारे घर के सभी लोग कबाड़ा बेचने के लिए गए थे और इस दौरान चूहों ने घर में रखे गैस सिलेंडर का पाइप काट दिया। जिससे धीरे-धीरे सारी गैस लीक होकर पूरे घर में फैल गई। हमने घर वापस आकर जैसे ही गैस जलाई उसने तुरंत सिलेंडर में आग पकड़ ली और ये आग एकदम से सिलेंडर से पूरे घर और फिर पूरी झुग्गी में फैल गई। कबाड़ा बेचने से जो भी पैसे हमें मिलते थे उसे हम घर पर जाकर अच्छे से संभाल कर रख देते थे। आग लगने से घर में जो ३५००० रुपये रखे हुए थे वह भी जल गए। पहनने के कपड़े, ओढ़ने के कपड़े और राशन सभी आग की चपेट में आ गए। आग लगने से आसपास की तीन और झुग्गी भी चपेट में आई। उनके भी कपड़े, राशन, पैसे और मोबाइल भी आग में राख हो गए। साथ ही आसपास जो कबाड़ा था वह भी आग में राख हो गया। हमें अगले ही दिन गांव मैं शादी में जाना था, लेकिन अब हमारे पास न तो कपड़े बचे हैं, न पैसे और न ही खाने का राशन।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

लड़कियों की पढ़ाई में अड़चन बनी दूरी, स्कूल दूर होने से शिक्षा नहीं हो पा रही पूरी

रिपोर्टर रवि

दोस्तों आपने बहुत सारे स्थानों और काफी वाहनो के पीछे लिखा हुआ देखा होगा कि बेटी पढ़ाओ, बेटी बढ़ाओ। ऐसा इसलिए ताकि माता पिता भी अपनी बेटी को पढ़ाएं और उन्हें आगे बढ़ने का मौका दें। इस अभियान का समाज के लोगों पर प्रभाव भी पड़ा है और कहीं ना कहीं माता-पिता भी अब इस बात के लिए जागरूक होते जा रहे हैं कि बिना शिक्षा के इन बच्चियां को भविष्य में कुछ भी नहीं हासिल होगा। माता-पिता को यह समझ में आ गया है कि शिक्षा के अभाव की वजह से ही आज उनका जीवन इतनी कठिनाइओं से बीत रहा है। इसी वजह से लाखो परेशानियां होने के बावजूद भी बहुत से अभिभावक अपने बच्चों खासतौर पर बेटियों को पढ़ाना चाहते हैं। लेकिन अभिभावकों की परेशानी यह है कि स्कूल स्त्रं२ में नहीं है। अगर हम नोएडा के भगत मार्केट सेक्टर 70 तथा और भी अन्य जगहों की बात करें तो

वहां पर सरकारी स्कूल इतनी दूर है कि माता-पिता वहां पर लड़कियों को भेजना ही नहीं चाहते। आज के माहौल को देखते हुए कोई भी अभिभावक नहीं चाहेगा कि उनकी बेटी अकेले दो से ढाई किलोमीटर दूर पैदल स्कूल जाए। उनकी आमदनी भी इतनी ज्यादा नहीं है कि वह अपने बच्चों को लाने और ले जाने के लिए प्राइवेट वाहन लगा सकें। इन्हीं सब कारणों की वजह से ये बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। कुछ अभिभावकों ने बच्चों को शिक्षित करने का एक तरीका तो निकाला है लेकिन यह तरीका थोड़े समय के लिए तो ठीक है। परन्तु इससे बच्चों को अच्छी पढ़ाई नहीं मिल पायेगी और नौकरियां मिलना भी काफी मुश्किल होगा। ये माता-पिता अपने बच्चों का अपने घर के आस-पास ही २०० या ३०० रूपए का कोई ट्यूशन लगवा दे रहे हैं। इस तरह से बच्चों को थोड़ी बहुत शिक्षा तो मिल जाती है लेकिन इनके पास स्कूल का कोई प्रमाण पत्र नहीं होता। आज के समय में एक अच्छी नौकरी पाने के लिए आपके पास सर्टिफिकेट और डिग्री होना बहुत जरूरी है। हम नोएडा अथॉरिटी से यही निवेदन करना चाहते हैं कि वह इस विषय पर ध्यान दें, ताकि जो लड़कियां स्कूल नहीं जा पा रही हैं वो स्कूल जा पाएं और पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो सकें।

चिलचिलाती धूप में सुबह से शाम तक बर्फ बेचकर अपने घर का गुजारा करते बच्चे

बातूनी रिपोर्टर अंजलि व रिपोर्टर संगीता, लखनऊ

जैसा कि आप सभी लोग जानते हैं कि आजकल कितनी ज्यादा गर्मी और धूप है। लेकिन इतनी तपती धूप में भी हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे काम करने के लिए मजबूर हैं। कभी उनका काम करने का मन नहीं भी होता है फिर भी उन्हें काम करने के लिए बाहर निकलना पड़ता है।

ऐसे ही हाल हमारे लखनऊ की विनायकपुरम बस्ती के बच्चों का भी है। जब हमारे बालकनामा पत्रकार ने बैठक करके बच्चों की समस्या जानने की कोशिश की तो हमारी बातूनी रिपोर्ट अंजलि ने बताया कि दीदी हमारी बस्ती में एक बच्चा बर्फ बेचने के लिए आता है और जब हमनें इस विषय पर जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की तो यह बात सामने आई कि उसके घर की आर्थिक स्थिति सही ना होने के कारण उसको ऐसी चिलचिलाती गर्मी और धूप में काम करना पड़ता है। जिसके कारण वो स्कूल भी नहीं जा पाता है। वह हर सुबह 10 बजे जाता है और शाम को 6 बजे वापस आता है ऐसी चिलचिलाती धूप में वह पूरा दिन सिर्फ बर्फ बेचता रहता है और अपने परिवार के लिए पैसे इकहट्ठा करता है। ये सिर्फ एक बच्चे के साथ नहीं हैं। यहां पर ऐसे बहुत से बच्चे है जो दिनभर कड़ी म्हणत करके चार पैसे कमा पते है। हमको सुबह से लेकर शाम तक घर पर छोड़कर काम पर चले जाते हैं। सुबह से लेकर शाम तक हमारे साथ क्या होता है इसकी बनक तक हमारे माता-पिता को नहीं होती। हमारे घर से थोड़ी सी दूरी पर एक 17 वर्ष का लड़का रहता है जो अपने छोटे भाई और उनके दोस्तों से जबरदस्ती भीख मंगवाने का काम करता है। यह बच्चे अपने आस-पास की मार्केट, रेड लाइट और झुग्गी बस्तियों में जाकर भीख मांगने का काम करते हैं। इन बच्चों को पैसों का लालच देकर इनसे भीख मंगवाने का काम करवाता है। उसका भाई बोलता है कि मैं तुम्हें १०० रूपए दूंगा अगर तुम भीख मांगकर लाओगे। यह बच्चे माता-पिता के काम पर जाने के बाद भीख मांगने के लिए निकल जाते हैं और उनके घर वापस आने से पहले ही यह बच्चे भी वापस आ जाते हैं। जो पैसे इन्हें भीख मांगकर मिलते हैं उनको यह उस व्यक्ति को दे देते हैं, जो व्यक्ति इन बच्चों से भीख मंगवाने का काम करता है। वो पैसे लेने के बाद इन बच्चों को पैसे भी नहीं देता है और उनको १० या ५ रूपए के चीज दिलवा देता है। जब सब बच्चे कहते हैं कि अब हम भीख मांगने नहीं जाएंगे तो वह इन्हें मारने की धमकी देता है और कभी-कभी मारपीट भी करता है। जब कोई झुग्गी बस्ती का व्यक्ति इन बच्चों को यह काम करते हुए देख लेता है तो वह व्यक्ति इन बच्चों के माता-पिता को भी यह बात बता देते हैं और माता-पिता उस व्यक्ति के पास भी गए हैं जो इन बच्चों से यह कार्य करवाता है। उसको समझाया भी है लेकिन फिर भी यह बच्चे दोबारा यह कार्य करने के लिए चले जाते हैं।

बालकनामा पत्रकारों की है सभी से अपील

कोरोना वैक्सीन जल्द से जल्द लगवाएं और सुरक्षित रहें

बातूनी रिपोर्टर साहिल वह रिपोर्टर किशन

कोरोना अभी भी खत्म नहीं हुआ है। अभी भी इससे जंग जारी है। लेकिन जंग जारी रखने के लिए वैक्सीनेशन करवाना बहुत जरूरी है। अब 6 साल से लेकर 18 साल तक के बच्चों के लिए भी वैक्सीन आ गई है और लगना भी शुरू हो गयी है। लेकिन क्या सड़क एवं कामकाजी बच्चे अभी भी वैक्सीनेशन करा रहे हैं या नहीं? यदि नहीं तो उन्हें क्या क्या परेशानी आ रही है? कुछ ऐसे ही सवाल हमारे पत्रकारों ने बच्चों से बात करके पूछे। नोएडा के अलग-अलग स्थानों पर रह रहे सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने अपनी बातों को बताया। बच्चों ने बताया कि वो जैसे ही सुई देखते हैं वैसे ही वो घबरा जाते हैं। इसी वजह से वो कोरोना वैक्सीन तो क्या बुखार में भी सुई लगवाने से बहुत डरते हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि, "भैया हमारी बस्ती में तो किसी को भी यह जानकारी नहीं है कि वैक्सीनेशन कहां होगा और कब होगा? यह सुनकर हमारे पत्रकारों ने बच्चों को जानकारी

दी कि आप के आस पास के सरकारी स्कूल में वैक्सीनेशन होता है और आप सरकारी हॉस्पिटल में भी जाकर कोरोना की वैक्सीन लगवा सकते हैं। बच्चों ने बताया भैया हम बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं और हमें जानकारी भी नहीं है कि स्कूल में कब यह कैंप लगता है। यदि हॉस्पिटल की बात करें तो हमारे माता पिता तो काम पर चले जाते हैं, जिसके कारण वह एक दिन की भी छुट्टी नहीं लेते और उन्हें छुट्टी मिल भी नहीं पाती है। क्योंकि 1 दिन में काम करके उनको 400 रूपी मिलते हैं यदि काम पर ही नहीं जाएंगे तो घर का खर्चा कैसे चलाएंगे।" पत्रकारों ने बच्चों को समझाया कि जैसा कि हम सभी जानते हैं कि काम करना जरूरी है लेकिन कोरोना वैक्सीन लगवाना भी बहुत जरूरी है। इस वैक्सीन के लगने से हमारे शरीर में कोविड-19 के खिलाफ इम्यूनिटी बढ़ती है जो इस वायरस से लड़ने में मदद करती है। यह हमारी रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ा देती है और शरीर में एंटीबॉडी विकसित करती है। आप सभी से अनुरोध है कि आप अपनी और अपने बच्चों की कोरोना वैक्सीन जल्द से जल्द लगवाएं और सुरक्षित रहे।

मां बाप की पीठ पीछे बच्चे ही बच्चों से मंगवाते हैं भीख

ब्यूरो रिपोर्ट

हम बालकनामा अखबार की माध्यम से आपको सड़क एवं कामकाजी बच्चों की जीवन से जुड़ी ऐसी खबरों की जानकारी देते हैं, जिसके बारे में आपको कोई भी अखबार या न्यूज चैनल नहीं बताता। इस बार के अंक भी आपको इन बच्चों से जुड़ी ऐसी ही एक खबर के बारे में बताएंगे जिसकी हकीकत किसी फिल्म के माध्यम से बनाई गयी कहानी से हूबहू मिलती होगी। यह कहानी दिल्ली की रहने वाले एक 10 वर्ष के बालक की है। जिसने बताया कि, "भैया मैं जिस एरिया में रहता हूं वहां पर अधिकतर बच्चों के माता-पिता

बिना शौचालय के खुले में नहाने से डरती हैं लड़कियां

बातूनी रिपोर्टर मीनाक्षी व बालकनामा रिपोर्टर आंचल

आज के इस आधुनिक दौर में भी लड़कियों के साथ भेदभाव किया जाता है। एक तरफ तो उन्हें घर की लक्ष्मी और शक्ति का प्रतीक मन जाता है वहीं दूसरी तरफ उनके साथ मारपीट और अभद्र व्यवहार किया जाता है। हमारी लखनऊ की पत्रकार ने विनायक पुरम बस्ती में रहने वाली लड़कियों से मिलकर उनकी समस्याओ के बारे में बात की तो लड़कियों ने बताया कि दीदी जहां हम रहते हैं वहां पर ना ही खेलने का उचित स्थान है और ना ही नहाने के लिए कोई सुरक्षित जगह। हम लोग नहाने के लिए लकड़ी की बल्ली जमीन में खोदकर लगाते हैं और इसको चारों तरफ से पन्नी या फिर एक कंबल से ढक देते हैं, ताकि नहाते समय कुछ दिखे ना। पर फिर भी मन में एक संकोच और भय सा बना रहता है कि कहीं नहाते समय तेज हवा ना चल जाये जिसके कारण बल्ली पर ढकी हुई पन्नी उड़ ना जाए। इन सब चीजों को देखकर हमें फूंक-फूंक के कदम रखने पड़ते हैं। बच्चों से बातचीत करने के दौरान हमने बच्चों से यह पूछा कि क्या यहाँ पर शौचालय नहीं जहां जाकर आप नहा धो सकते हो। तो लड़कियों ने बताया कि दीदी यहां पर शौचालय तो है लेकिन वो नहाने के १० रूपए लेते हैं। हम लोग अपनी रोजी-रोटी चलाने के लिए कितना काम करते हैं तो हमारे पास इतने भी पैसे नहीं हैं कि हम हर रोज नहाने के लिए 10 रूपए शौचालय वाले को दें। लड़कियों ने यह भी कहा कि वैसे तो समाज हमारी इतनी परवाह करता है जितने हमारे अपने नहीं करते हैं। लेकिन जब हमारे साथ इस तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है तब कोई भी आकर खड़ा नहीं होता।

गर्मी से डर नहीं लगता साहब

रिपोर्टर रवि

गर्मियों ने तो सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। हालत यह है कि आदमी अपने आप को लू एवं गर्मी से बचाने के लिए ना जाने क्या-क्या जतन कर रहा है। लेकिन इतनी भीषण गर्मी में भी बहुत से बच्चे अपने काम धंधे में लगे पड़े हैं। उन्हें नहीं पता कि कितने डिग्री तक पारा चढ़ चुका है या गर्मी का क्या हाल है। क्योंकि इस पारे से ज्यादा उनके लिए काम करना जरूरी है। उन्हें बस यही पता है कि अगर वह काम नहीं करेंगे तो उनके परिवार वाले इस पारे से तो परेशान हो ही रहे हैं साथ ही इससे भी बड़ी समस्या भूख वाले पारे की है जिससे वो ज्यादा दिक्कत में आ जाएंगे। इसीलिए ये सर्दी, गर्मी, बरसात की परवाह किए बगैर ही हर दिन अपने काम को करते हैं। इन कामों को करने की वजह से इनके परिवार की जरूरते पूरी हो पाती हैं। ये बच्चे अपना और अपनों का पेट पालने के लिए कड़ाके की धूप में ना जाने कितने ही इस तरह के कामों में लगे रहते हैं। इन बच्चों के अभिभावक भी इसी तरह के काम करते हैं ताकि इन सभी के कमाने से पूरा परिवार चल सके। इनके घर के लगभग सभी सदस्य कबाड़ा चुनना, सामान बेचना इत्यादि काम करते हैं, तब जाकर ये अपनी घर का खर्चा चला पाते हैं।

बालकनामा के पत्रकार ने बच्चों के साथ की बैठक और जाना उनकी पसंद और नापसंद के बारे में

बातूनी रिपोर्टर अंजलि व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

हमारे बालकनामा के पत्रकार लखनऊ की बस्ती में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से मिले और उनके साथ बैठक की। बैठक के दौरान उन्होंने बच्चों से उनकी पसंद और नापसंद के बारे में जानने की कोशिश की। तो ऐसी बहुत सी बातें निकल कर आई जिनसे हम भी अनजान थे। लेकिन हम बालकनामा अखबार के माध्यम से आपको उन बच्चों से मिलवाते हैं जिनको आप देखते होंगे पर शायद उन पर ध्यान नहीं देते होंगे। जब रिपोर्टर आंचल ने उन बच्चों से उनकी पसंद और नापसंद के बारे में पुछा तो उन्होंने बताया कि वह पढ़ना लिखना चाहते हैं। लेकिन उनकी उम्र तकरीबन १४ या १५ साल से ज्यादा हो जाने के कारण अब किसी भी छोटी क्लास में उनका स्कूल में दाखिला नहीं हो पा रहा है। साथ ही बच्चों ने यह भी बताया कि पढ़ाई-लिखाई करने के लिए बड़ी मुश्किल से हमने अपने अभिभावकों को मनाया था लेकिन अब हमारी उम्र बड़ी होने के कारण हमारा कहीं दाखिला नहीं हो पा रहा है। कोरोना के समय हमारी पढ़ाई बंद थी और घरवाले भी जागरूक नहीं थे। लेकिन अब हम पढ़ना चाहते हैं। साथ ही बच्चों ने मुस्कुराते हुए कहा कि हमारी किस्मत भी क्या अजीब है कैसे-कैसे खेल खेलती है। जब बड़ी मुश्किल से हमारे अभिभावक हमारी पढ़ाई के लिए माने थे उस समय महामारी आ गयी और अब उम्र ज्यादा होने से स्कूल में दाखिला नहीं हो पा रहा है।

बदला की भावना ले सकती थी पियूष की जान

बच्चों ने पीट-पीटकर किया बेहोश

बातूनी रिपोर्टर कामिनी व बालकनामा रिपोर्टर आंचल

जब हमारी लखनऊ की पत्रकार ने पुरनिया कांटेक्ट प्वाइंट की विजिट की और बच्चों से मिली। अपनी विजिट के दौरान पत्रकार ने देखा कि बहुत से बच्चे एक झुंड बनाकर बैठे हुए थे। वो आपस में कुछ बातें भी कर रहे थे। जब हम वहां पर गए और उनकी बातें सुनी तो यह पता चला कि एक बच्चा जिसका नाम पियूष (परिवर्तित नाम) है, उसकी उम्र लगभग 13 साल की होगी और उसी की उम्र के बच्चों ने उस बच्चे को इतना मारा कि वह बेहोश हो गया।

इस मामले की छानबीन करने के लिए हमारे पत्रकार दूसरे दिन भी पुरनिया कांटेक्ट प्वाइंट पर गए और दूसरे बच्चों से उसकी इस हालत के बारे में पुछा तो यह बात निकलकर

बच्चों की आर्थिक स्थिति का जिम्मेदार कौन ?

बातूनी रिपोर्टर अंजली व रिपोर्टर संगीता, लखनऊ

हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे बहुत कुछ करना चाहते हैं, लेकिन उनके जीवन में इतनी समस्याएं ऐन कि वो आगे बढ़ ही नहीं पाते। अगर किसी तरह से आगे बढ़ भी गए तो घर की समस्याओं के आगे के आगे उन्हें अपने सपनों को दबाना पड़ जाता है। वो अपने सपनों को तोड़कर अपने अभिभावक की मदद करने के लिए आगे बढ़ जाते हैं। ऐसे ही एक कहानी है विनायकपुरम बस्ती में रहने वाले बच्चे की। जब हमारे बालकनामा पत्रकार ने मीटिंग के दौरान उस बच्चे से बात की तो उसने बताया कि दीदी मेरा स्कूल जाने का तो बहुत मन करता है पर घर के हालातों को देखकर हम स्कूल नहीं जा पाते हैं। हमारे घर

में काम करने वाले ज्यादा लोग नहीं है। कमाने वालों में सिर्फ हमारी मम्मी ही हैं जो बाहर घरों में काम करने के लिए जाती हैं। हमारे पापा कुछ नहीं कर पाते हैं क्योंकि वो बीमार रहते हैं। हमारी मम्मी से अकेले घर का खर्च चल नहीं पा रहा था जिसके कारण हम भी उनकी मदद करने के लिए काम पर जाने लगे। हम नगर निगम की तरफ से जो कूड़े वाली गाड़ी चलती है उसी में काम करते हैं और घरों में कूड़ा उठाने जाते हैं। इससे हमें महीने का ५००० रूपए मिल जाता है। इससे अब हमारे घर का खर्च ठीक से चल जाता है, नहीं तो पहले घर का खर्चा चलाने में बहुत मुश्किल होती थी।

इस बच्चे की कहानी ने हमें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि उसकी ऐसी स्थिति का जिम्मेदार कौन है? परिवार, समाज या गरीबी।

सामने आई कि उस बच्चे ने अपने बस्ती के कुछ बच्चों के साथ मिलकर आपस में झगड़े कर लिए थे। जिसके कारण बदले की भावना के चलते उस बच्चे से बदला लेने के लिए कुछ बच्चों ने बाहर के बच्चों को पैसे देकर उस बच्चे को पिटवाया। उन बच्चों ने पीयूष (परिवर्तित नाम) को इतना मारा कि वह बेहोश हो गया। होश आने पर जब पियूष के अभिभावकों ने उससे यह पूछा कि आपको किसने मारा है? तो पियूष ने बताया कि जो बच्चे मुझे मार रहे थे वह चेहरे पर मास्क लगाए हुए थे जिसके कारण मैं उन्हें पहचान नहीं पाया। जब उस बच्चे के दोस्तों से बात की तो उन बच्चों का यह कहना था कि दीदी हमने यहां पर देखा है कि जब भी किसी बच्चे के अभिभावकों के साथ मारपीट होता है तो वह बदला लेने के लिए बच्चों के साथ कुछ ना कुछ करते हैं। जिसका शिकार हमारा दोस्त पियूष बना।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471